ISSN No. (E) 2455 - 0817
ISSN No. (P) 2394 - 0344

RNI : UPBIL/2016/67980

VOL-5* ISSUE-6* September - 2020
Monthly / Bi-lingual

Multi-disciplinary International Journal

Remarking An Analisation

Peer Reviewed / Refereed Journal

Publisher- Social Research Foundation, 128/170, H-Block, Kidwai Nagar, Kanpur-11 (U.P.)

UGC S.NO. 40827
UGC approved listed
Till 14 June 2019

Impact Factor (2015)
GIF = 0.543

Impact Factor (2018)
IIJIF = 6.134

Indexed-with Google scholar

Impact Factor (2018)
SJIF = 6.11

SJIF (2020) = 6.509

P: ISSN NO.: 2394-0344
E: ISSN NO.: 2455-0817
RNI No.UPBIL/2016/67980
VOL-5* ISSUE-6* September - 2020
Remarking An Analisation

Contents (Hindi)

S. No.	Particulars	Subject	Page No.	
			From	To
1.	लॉक डाउन में महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का विश्लेषण **Analysis of Social and Economic Condition of Women During Lock-Down Period** मयंक मोहन एवं कविता अग्रवाल, मोदीनगर, उत्तर प्रदेश, भारत	अर्थशास्त्र	H-01	H-04
2.	मणिपुर में उग्रवाद एवं छोटे हथियारों का प्रसार **Extremism and Small Arms Proliferation In Manipur** कमलेश चन्द्र पाण्डेय, नई दिल्ली एवं आर0 सी0 एस0 कुँवर गढ़वाल, उत्तराखण्ड, भारत	रक्षा, स्ट्रॉतेजिक एवं भू राजनीतिक अध्ययन विभाग	H-05	H-011
3.	शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के संदर्भ में कक्षा–कक्ष में महामारी कोविड– 19 के दौरान ऑनलाइन शिक्षण का अध्ययन **A Study of Online Teaching During Covid-19 and Classroom Teaching in Reference To Teaching-Learning Process** रश्मि जैन एवं योगेश कुमार सिंह, सागर, मध्य प्रदेश, भारत	शिक्षाशास्त्र	H-12	H-17
4.	गोड्डा जिला के अनुसूचित जनजाति तथा अनुसूचित जाति में महिला साक्षरता : एक तुलनात्मक अध्ययन शोधपत्र का शीर्षक **Female Literacy in Scheduled Tribes and Scheduled Castes of Godda District: Title of a Comparative Study Paper** पूजा कुमारी, बिहार, भारत	भूगोल	H-18	H-25

P: ISSN NO.: 2394-0344
E: ISSN NO.: 2455-0817
RNI No.UPBIL/2016/67980
VOL-5* ISSUE-6 September - 2020
Remarking An Analisation

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के संदर्भ में कक्षा–कक्ष में महामारी कोविड– 19 के दौरान ऑनलाइन शिक्षण का अध्ययन

A Study of Online Teaching During Covid-19 and Classroom Teaching in Reference To Teaching-Learning Process

Paper Submission: 15/09/2020, Date of Acceptance: 26/09/2020, Date of Publication: 27/09/2020

रश्मि जैन
विभागाध्यक्षा,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
डॉक्टर हरीसिंह गौर
विश्वविद्यालय, सागर,
मध्य प्रदेश, भारत

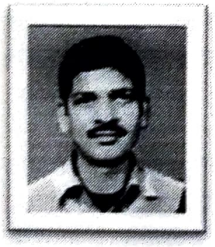

योगेश कुमार सिंह
अतिथि शिक्षक,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
डॉक्टर हरीसिंह गौर
विश्वविद्यालय, सागर,
मध्य प्रदेश, भारत

सारांश

किसी देश या समाज का विकास वहाँ के मानव संसाधन पर निर्भर करता है। अतः समाज या राष्ट्र का महत्वपूर्ण अंग मानव है। जिस प्रकार व्यक्ति के बिना समाज की कल्पना नहीं जा सकती उसी प्रकार मानव विकास की कल्पना शिक्षा के बिना नहीं की जा सकती है। शिक्षा के द्वारा ही मानव का सर्वांगीण विकास संभव हो सकता है। इसके लिए विद्यालय, पाठ्यचर्या, शिक्षण विधियाँ, शिक्षक–शिक्षार्थी की एक श्रृंखला होती है, जिसमें शिक्षण अधिगम प्रक्रिया चलती है जिसके द्वारा सीखने वाले के व्यवहार में वांछित परिवर्तन आता है। वर्तमान परिस्थिति में महामारी कोविड–19 के दौरान शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के तरीके बदले हैं जिसको कोविड–19 ने प्रभावित किया है। इस प्रभाव से आज विमुक्त शैक्षिक संसाधन के उपयोग पर बल दिया जा रहा है। इस संदर्भ में प्रस्तुत शोध अध्ययन में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के संदर्भ में कक्षा–कक्ष व महामारी कोविड – 19 के दौरान ऑनलाइन अध्यापन का अध्ययन किया गया है।

The development of any nation depends on its human resources. Therefore, human is very important part of any nation. As we cannot imagine a nation without human beings, in the same way we cannot imagine human development without education. There is a chain of school, curriculum, teaching methods, teacher-student relation and so on. In this entire process, teaching-learning methods are implemented to gain desired changes in the behavior of learner. During Covid-19, teaching - learning process has also been affected and needs diversified teaching methods. The idea of online education has been strengthened due to Covid-19. This paper studies and evaluates the process of teaching-learning during Covid-19 like online classes and so on.

मुख्य शब्द : कोविड–19, शिक्षण, अधिगम, ऑनलाइन अध्यापन।
Covid-19, Teaching, Learning, Online Teaching.

प्रस्तावना

आवश्यकता ही अविष्कार की जननी है। यह कथन हमेशा ही मानव को पूर्ण आभास कराता रहा है। जीवन में आगे बढ़ने के लिए आवश्यकता को महसूस करना और उसको अपने अनुकूल बनाने के लिए मानव व्यवहार करता है। लचीलापन मानव का सबसे बड़ा गुण है जो आगे बढ़ने में सक्षम बनाता है। जैसा कि कौटिल्य महोदय ने कहा था कि परिस्थितियों के अनुसार वहीं मनुष्य जीवित रह सकता है जिसमें समायोजन की क्षमता होगी। अतः मानव सदियों से अपने में समायोजन और परिवर्तन स्वीकारता आ रहा है। इसीलिए वह निरंतर प्रगति कर रहा है। आज जो विश्व की परिस्थितियाँ बनी है उनमें मानव जीवन के साथ–साथ और अन्य जीवों को भी प्रभावित किया है चाहे वह प्रकृति निर्मित हो या मानव निर्मित। न्यूमेयर व्यक्ति को सामाजिक प्राणी के रूप में परिभाषित करते हुए कहा है कि "एक व्यक्ति के सामाजिक प्राणी के रूप में परिवर्तित होने की प्रक्रिया का नाम ही समाजीकरण है।"[1] सामाजिक प्राणी होने के नाते मानव–मानव के बीच अन्तःक्रिया भी होना ही उसे सामाज में रहने के लिए प्रेरित करता है, इस प्रेरणा को निरन्तर बनाये रखने के लिए समाज की संस्कृति,